

बॉलयर की राख से पोटैश युक्त उर्वरक का उत्पादन

❑ चीनी कारखानों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों से मूल्यवर्धित उत्पाद पर जोर

कानपुर, 10 नवम्बर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में आयोजित फिल्टर केक से बायो-सीएनजी अथवा बायोगैस का उत्पादन और शीश आधरित आसवनियों में इन्सिनेशन बॉलयर से प्राप्त राख की मदद से पोटैश समृद्ध उर्वरक का उत्पादन पर एक वेबिनार का शुभारंभ करते हुए खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण, सचिव सुधांशु पाण्डेय ने कहा कि दोनों महत्वपूर्ण विषय चीनी कारखानों एवं आसवनियों से प्राप्त अपशिष्ट पदार्थों से मूल्यवर्धित उत्पाद की प्राप्ति से जुड़े हैं। आज के बाजार में इन महत्वपूर्ण उत्पादों की सुनिश्चित मांग को देखते हुए चीनी कारखानों के लिए आय के एक नये स्रोत के रूप में ले सकते हैं। जिन पर अब तक पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। ऐसी प्रौद्योगिकी विकसित करने से शर्करा उद्योग को आर्थिक लाभ होगा। संयुक्त सचिव सुबोध सिंह ने कहा कि शर्करा उद्योग के सहे-उत्पाद अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं जिनका आर्थिक रूप से लाभकारी उत्पाद प्राप्त करने में उपयोग किया जाता है। संयुक्त प्रयास के साथ अपशिष्ट से लाभ (वेस्ट टु वेल्थ) अथवा संसाधन के रूप में इसका प्रयोग किया जा सके। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने प्रौद्योगिकी का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि संस्थान द्वारा फिल्टर केक से बायो-सीएनजी अथवा बायोगैस का उत्पादन का सफल प्रयोग संस्थान स्थित प्रायोगिक शर्करा प्रयोगशाला से किया जा चुका है। उन्होंने इस विषय पर यह भी कहा कि चीनी मिलों द्वारा प्रति वर्ष लगभग 9-10 मिलियन टन फिल्टर केक को निष्कापित किया जाता है। जिससे लगभग 0.35-0.40 मिलियन टन बायो-



वेबिनार में शामिल अधिकारता।

चाहिये। वेबिनार में मेमर्स जे एड एफ बायोगैस, मेमस स्पेक्ट्रम रिन्यूएबल एनर्जी लि. एवं मेमर्स प्राज इंडस्ट्रीज के द्वारा फिल्टर केक से बायोगैस, बायो-सीएनजी तथा अपशिष्ट स्लरी का जैव उर्वरक के रूप में प्रयोग पर प्रस्तुति दी गयी। मेमर्स जे एड एफ फिल्टर के निदेशक जोसेफ ने कहा कि उनके द्वारा इस प्रौद्योगिकी में आवश्यक सुधार किया जा चुका है। एवं वर्तमान में फिल्टर केक की गुणवत्ता एवं सफाई चैन प्रबंधन से जुड़े कुछ चुनौतियों के निराकरण का प्रयास किया जा रहा है। इस अवसर पर मेमर्स न्यू फ्रंटियर इंजीनियर्स एवं मेमर्स गायत्री फर्टिलिजेंट इंटरनेशनल प्रा. लि. ने अपनी प्रस्तुति में पोटैश -समृद्ध में अन्य पोषक तत्वों के समावेश एवं दानेदार उर्वरक बनाने की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया।



LUCKNOW | WEDNESDAY | NOVEMBER 11, 2020

Value-added products from waste of sugar factories, distilleries discussed

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

National Sugar Institute, Kanpur organised a webinar on topics relating to production of bio-gas or bio-CNG from filter cake and production of potash-rich fertiliser from the ash of incineration boilers in molasses distilleries on Tuesday.

Inaugurating the webinar, Secretary (Food & Public Distribution), Government of India, Sudhanshu Pandey, said that both the topics were important for obtaining value-added products from the waste of sugar factories and distilleries.

He said as on date, the potential of producing products which had assured market and could open a new stream of revenue for the sugar industry had not been adequately harnessed.

Pandey congratulated the NSI for taking the initiative for developing technologies which may go a long way in improving the financial condition of the sugar industry.

Speaking at the webinar, Joint Secretary (Sugar), Government of India, Subodh Singh, said the by-products of the sugar industry were very



Speakers at the webinar organised by NSI on Tuesday

Pioneer.

important and their commercial exploitation through production of innovative products was the need of hour.

He said the industry, institutes and related organisations had to work in cohesion for converting the so-called waste to wealth or resources.

Indian Sugar Mills Association president Vivek Pittie, while lauding the efforts being made by the National Sugar Institute, said the Government of India should provide policy support for taking forward these initiatives.

National Sugar Institute-Kanpur Director Prof. Narendra Mohan, while presenting an overview of the

technology of production of bio-gas or bio-CNG from filter cake, said that the institute had already conducted successful trials at the experimental sugar factory.

"We produce about 9-10 million tonnes of filter cake every year which may yield about 0.35-0.40 million tonnes of bio-CNG," he added. Likewise, the ash of the incineration boilers in molasses distillery can be converted into potash-rich fertiliser which is in great demand and is imported to a larger extent, he added.

Prof Mohan said that for about 46 billion litres of spent wash produced in molasses

based distilleries per year, utilisation of spent wash may provide 12,88,000 tons of potassium annually and tentatively one year's effluents could meet the potassium requirement of 1.55 million hectare land.

"Now a few distilleries have taken up installation of such plants but it is to be taken forward and should be made an integral part of the waste management system," he added.

During the webinar, presentations were made by M/s J&F Biogas, M/s Spectrum Renewable Energy Pvt. Ltd and M/s Praj Industries on production of biogas/bio-CNG from filter cake and utilisation of residual slurry as bio-fertiliser.

"We have perfected the technology and only certain challenges with respect to quality of filter cake and supply chain management have to be addressed, said M/s J&F Biogas director Joseph.

For converting the boiler ash to potash-rich fertiliser presentations were made by M/s New Frontier Engineer and M/s Gayatri Fertilizer International Pvt. Ltd., elaborating the process of addition to other nutrients and granulation.

गन्ने के रस के कचरे से बायो सीएनजी

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। गन्ने के रस से चीनी बनाने की प्रक्रिया में निकलने वाले कचरे (अशुद्धियां) से बायो सीएनजी बनेगी और डिस्टलरी से मिलने वाली राख का इस्तेमाल पोटाश समृद्ध उर्वरक के रूप में हो सकता है। इससे चीनी मिलों की आय में वृद्धि होगी। इसके साथ ही विदेश से पोटाश कम आयात करने पड़ेगा। इस संबंध में मंगलवार को नेशनल शूगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में वेबिनार हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सचिव खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण सुधांशु पांडेय ने कहा कि आज के बाजार की मांग को देखते हुए बायलर की राख और बायो सीएनजी आय के नए स्रोत बन सकते हैं।



प्रो. नरेंद्र मोहन, सुबोध सिंह और विवेक पिती।

केंद्रीय सचिव सुधांशु पांडेय ने कहा कि अब तक इन स्रोतों पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। बायोगैस और राख से पोटाश समृद्ध उर्वरक तैयार करने की तकनीक विकसित करने के लिए केंद्रीय सचिव ने एनएसआई की सलाहना की। संयुक्त सचिव (शर्करा) सुबोध सिंह ने कहा कि आय बढ़ाने के लिए कचरे को संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने का यह अच्छा तरीका है।

वेबिनार में भारतीय चीनी मिल्स एसोसिएशन के अध्यक्ष विवेक पिती ने तकनीक विकसित करने के लिए एनएसआई की तारीफ की। इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि तकनीकों का प्रयोगशाला में सफल प्रयोग किया जा चुका है। अपशिष्ट प्रबंधन की व्यवस्था सभी चीनी कारखानों में आवश्यक अंग के रूप में की जानी चाहिए।

वक्ता बोले, अपशिष्ट प्रबंधन की व्यवस्था सभी चीनी के कारखानों में अवश्य होनी चाहिए

चीनी मिलों से निकलने वाले

फिल्टर केक से बनेगी ऊर्जा

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने चीनी मिलों से निकलने वाले फिल्टर केक से बायो-सीएनजी व बायोगैस बनाने का सफल प्रयोग किया है। आसवनियों में इंजिनरेशन बायलर से प्राप्त राख की मदद से पोटाश समृद्ध उर्वरक भी बनाया जा सकता है। इससे चीनी मिलों व आसवनियों को लाभदायी बनाने में काफी मदद मिल सकती है।

मंगलवार को एनएसआई में हुयी एक वेबिनार में भारत सरकार के खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण सचिव सुधांशु पांडेय ने कहा कि बाजार में इन महत्वपूर्ण उत्पादों की सुनिश्चित मांग को देखते हुए ये उत्पाद चीनी कारखानों के लिए आय के एक नये स्रोत के रूप में उभर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के तकनीक के विकास से संस्थान को भी आर्थिक लाभ होगा। संयुक्त सचिव (शर्करा) सुबोध सिंह ने कहा कि नव विकसित तकनीक को बढ़ावा देने के लिए उद्योग, संस्थान व संबंधित इकाईयों को संयुक्त रूप से प्रयत्न करना होगा। इसी से अपशिष्ट संसाधनों का प्रयोग कर लाभ (वेस्ट टू वैल्यू) की अवधारणा को अमली जामा पहनाना संभव हो सकेगा।

भारतीय चीनी मिल्स एसोसिएशन के अध्यक्ष विवेक पिती ने कहा कि भारत सरकार को इसके लिए नीतिगत सहयोग प्रदान करना चाहिए।



नरेंद्र मोहन

वेबिनार में जेएंडएफ के निदेशक जोसेफ ने कहा कि उनके द्वारा फिल्टर केक की गुणवत्ता एवं सप्लाय चैन प्रबंधन से जुड़े कुछ चुनौतियों के निराकरण का प्रयास किया जा रहा है। न्यू फ्रंटियर इंजीनियर्स एवं गायत्री फर्टिप्लान्ट इंटरनेशनल प्रा.लि. ने अपनी प्रस्तुति में पोटाश समृद्ध उर्वरक में अन्य पोषक तत्वों के समावेश एवं दानेदार उर्वरक बनाने की प्रक्रिया समझाया।

प्रति वर्ष बन सकता है 0.40 मिलियन टन बायो-सीएनजी : एनएसआई के निदेशक प्रो.नरेंद्र मोहन ने बताया कि संस्थान द्वारा फिल्टर केक से बायो-सीएनजी अथवा बायो गैस के उत्पादन का सफल प्रयोग किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि चीनी मिलों द्वारा प्रति वर्ष लगभग 9-10 मिलियन टन फिल्टर केक को निष्कासित किया जाता है, जिससे लगभग 0.35-0.40 मिलियन टन बायो-सीएनजी प्राप्त की जा सकती है।